Research Strategy,
Reg.No. RNI UPBIL2011/41281
ISSN 2250-3927
Vol.-XIIth, 2022

ICRJIFR -
Impact Factor - 4.7065

कोरिया जिला (छ.ग.) में कृषि भूमि उपयोग के बदलते स्वरूप का अध्ययन

ओमकार कुशवाहा*

प्रस्तावना (Introduction):

भूमि का उपयोग भिन्न–भिन्न प्रयोजनों हेतु भिन्न–भिन्न संदर्भों में किया जाता है। साधारण मानव के लिए भूमि उसके आवास उपलब्ध कराने के संदर्भ में प्रयुक्त की जाती है। वहीं यदि आर्थिक उपयोग के संदर्भ की बात करें तो भूमि का प्राथमिक उपयोग कृषि के लिए एवं उसके पश्चात् अन्य क्रिया–कलापों के संदर्भ में किया जाता है। उदाहरणस्वरूप, औद्योगिक इकाईयों की स्थापना, परिवहन अवसंरचना इत्यादि के निर्माण में भूमि का उपयोग किया जाता है। भूमि पर निरंतर जनसंख्या का दबाव बढ़ता जा रहा है, जिससे भूमि उपयोग प्रारूप में परिवर्तन परिलक्षित होने लगा है। **भूमि, किसी भी राष्ट्र की सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का आधार होती है। भूमि की उपलब्धता द्वारा ही यह सुनिश्चित होता है कि किसी राष्ट्र की सभ्यता एवं संस्कृति का विकास किस सीमा तक हो सकता है। भूमि एक प्राकृतिक संसाधन के रूप में सभी प्राणियों के लिए सर्वत्र सुलभ संसाधन हैं।** वहीं जब मानवीय संदर्भ की बात करें तो मानव के आर्थिक विकास के लिए यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। फोक्स (1956) के अनुसार निहित भूमि की विशेषताओं के आधार पर किसी क्षेत्र का वास्तविक प्रयोजन के साथ उपयोग हो, भूमि उपयोग कहा जाता है। समय के साथ–साथ इन प्रयोजनों का स्वरूप बदलता रहता है, जिससे भूमि उपयोग प्रारूप में भी परिवर्तन दखेने को मिलता है।

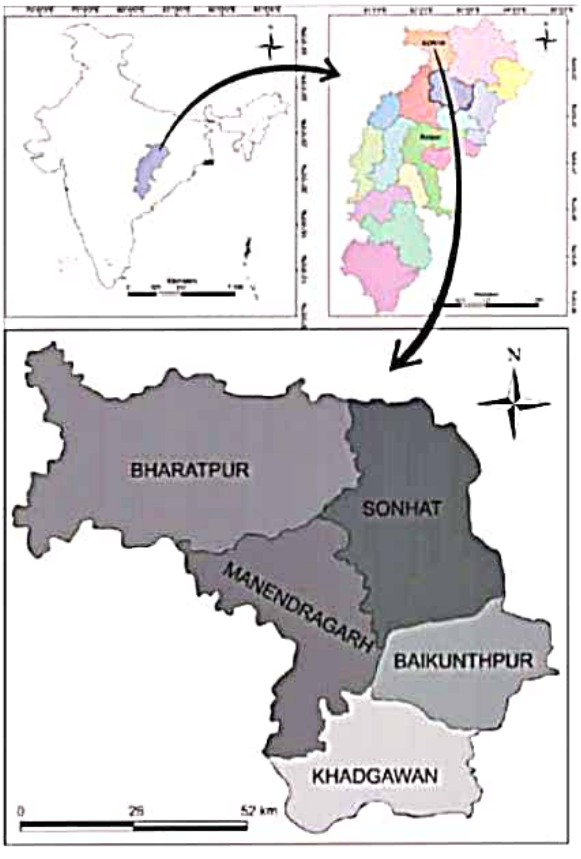

अध्ययन क्षेत्र –

कोरिया जिला छत्तीसगढ राज्य के उत्तर–पश्चिम में स्थित है, यह जिला 25 मई 1998 को सरगुजा से अलग होकर अस्तित्व में आया। इसका नाम कोरिया जिला पूर्व रियासत कोरिया से लिया गया है। कोरिया जिला 23°2'42'' से 23°44'46'' उत्तरी अक्षांश के बीच तथा 81°46'42'' से 82°33'43'' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई है 700 मीटर है। जिले का कुल क्षेत्रफल 5978 वर्ग कि.मी. है। यह जिला उत्तर में मध्य प्रदेश के सीधी जिला, पश्चिम में मध्य प्रदेश के शहडोल जिला, दक्षिण में बिलासपुर तथा कोरबा जिला पूर्व में अपने मूल जिला सरगुजा (वर्तमान सूरजपुर जिला) से घिरा है।

कोरिया जिले का छोटा हिस्सा गंगा बेसिन में स्थित है और शेष भाग महानदी बेसिन में है। गंगा बेसिन सोनहत के उत्तर में मेंड्रा गांव से आगे शुरू होता है और मेंड्रा से दक्षिण की ओर महानदी बेसिन है। सोन की प्रमुख सहायक नदी गोपद है जो मेंड्रा गांव से लगभग 10 मील उत्तर में निकलती है, इसका जल प्रवाह जिले के उत्तरी भाग में होता है। हसदेव महानदी की प्रमुख सहायक नदी है,

* शोध छात्र (भूगोल) अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़

हसदेव का उद्‌गम ग्राम मेंड्रा से होता है। हसदेव की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं गेज, झुमका और बनिया। जिले का पूर्वी क्षेत्र सोन बेसिन में आता है और इसका अपवाह गोबरी नदी द्वारा होता है जो सूरजपुर जिले के रेहर में मिलती है। गोबरी का उद्‌गम स्थल पटना के उत्तर में स्थित पहाड़ियाँ हैं। जिले की जलवायु उष्ण एवं समशीतोष्ण है, औसत वर्षा 4025.4 मिलीमीटर तथा औसत तापमान न्यमनतम 14.4 एवं अधिकतम तापमान 29.8 (2011–12) दर्ज की गई। कोरिया जिले की कुल जनसंख्या वर्ष 2011 के अनुसार 658917 व्यक्ति, जिसमें 334737 पुरूष तथा 324180 महिला है। जनसंख्या घनत्व 100 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. निवास करते हैं तथा जिले का लिंगानुपात 968 है।

शोध का उद्‌देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ निर्माण के बाद कोरिया जिले में कृषि का विकास एवं कृषि भूमि परिवर्तन का विश्लेषण करना। साथ ही अध्ययन क्षेत्र में निम्नांकित बिन्दुओं पर आँकलन व विश्लेषण किया जाना है –

1. कोरिया जिले के कृषि भूमि में पिछले 1 दशक में हुये परिवर्तन का विश्लेषण करना।
2. कोरिया जिले में भूमि उपयोग में हुये परिवर्तन का अध्ययन करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में फसलों के क्षेत्रफल में हुए परिवर्तन का पता लगाना।

आँकड़ों का संकलन एवं विधि तंत्र –

प्रस्तुत अध्ययन हेतु कृषि के मात्रात्मक एव गुणात्मक आंकड़ों की आवश्यकता है। इस हेतु जिले के वार्षिक ऋतु एवं फसल प्रतिवेदन में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण किया जाना है, जो कि द्वितीय आँकडों पर आधारित है। भूमि उपयोग से संबंधित आँकड़ों हेतु जिले के भू–अभिलेख कार्यालय से प्राप्त वार्षिक फसल प्रतिवेदन, जिले के सांख्यिकीय पुस्तिका, भारत की जनगणना 2011 के विभिन्न प्रकाशन से एकत्र किया गया है। विश्लेषित आँकड़ों की सम्प्रेषण क्षमता तथा ग्राह्यता बढ़ाने के उद्‌देश्य से उपयुक्त मानचित्र व आरेखों का उपयोग किया जा रहा है।

भूमि उपयोग प्रतिरूप –

अध्ययन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। किसी भी क्षेत्र की भूमि का सूचीबद्ध विधि से किया जाने वाला उपयोग ही भूमि उपयोग है। इस प्रकार उपयोग द्वारा भूमि की क्षमताओं का निर्धारण किया जाता है। भूमि उपयोग मानव एवं पर्यावरण के साथ समायोजन है। भूमि उपयोग जहाँ प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक उपादानों का संयोग का प्रतिफल है, वहीं राजनीति कारक में शासन द्वारा निर्धारित नीतियों से भूमि उपयोग में परिवर्तन निश्चित है।

तालिका : 1

कोरिया जिला : भूमि उपयोग का क्षेत्रफल तथा वर्गीकरण (2001–02)

क्र.सं.	विकासखण्ड	प्रतिवेदित क्षेत्रफल (हे.)	ग्रामीण वन (राजस्व वन)	कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि	चारागाह, झाड़ी, झुंड	पड़ती भूमि	निराफसल क्षेत्र शुद्ध बोया गया
1.	सोनहत	23064	14.08	11.29	12.62	11.09	50.89
2.	बैकुण्डपुर	50123	5.73	14.68	7.33	16.94	55.27
3.	मनेन्द्रगढ़	39526	18.93	15.27	12.34	10.88	42.56
4.	खडगवां	58901	11.51	9.38	24.35	11.19	43.54
5.	भरतपुर	73282	37.80	17.04	8.94	7.58	28.61
	कोरिया जिला	244896	19.64	13.89	13.21	11.23	42.01

स्रोत – वार्षिक ऋतु एवं फसल प्रतिवेदन भू अभिलेख शाखा जिला कोरिया, छत्तीसगढ़

(A) वन क्षेत्रफल – वर्ष 2001–02 की तुलना में 2010–11 में वनभूमि के क्षेत्र में 0.64 प्रतिशत में कमी प्राप्त हुई। जिले के तहसील स्तर पर वनभूमि के क्षेत्र में लगभग सभी तहसीलों में कमी देखी गई।

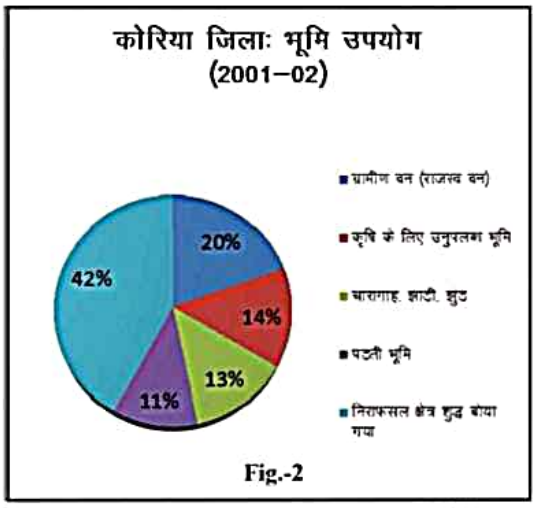

Fig.-2

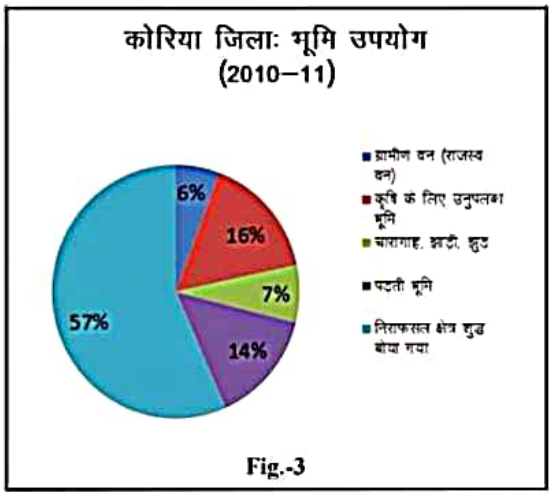

Fig.-3

तालिका : 2

कोरिया जिलाः भूमि उपयोग का क्षेत्रफल तथा वर्गीकरण (2010–11)

क्र.	विकासखण्ड	प्रतिवेदत क्षेत्रफल (हे.)	ग्रामीण वन (राजस्व वन)	कृषि के लिए उनुपलब्ध भूमि	चारागाह, झाड़ी, झुंड	पड़ती भूमि	निराफसल क्षेत्र शुद्ध बोया गया
1	सोनहत	23064	14.06	16.66	12.70	16.40	45.09
2	बैकुण्ठपुर	50123	5.69	15.93	7.30	14.50	56.56
3	मनेन्द्रगढ़	39526	17.32	16.23	14.04	10.96	41.46
4	खडगवां	58901	11.07	10.06	22.74	9.66	46.45
5	भरतपुर	73282	36.93	17.49	9.34	6.73	29.47
	कोरिया जिला	**244896**	**19.00**	**15.11**	**13.17**	**10.62**	**67.00**

स्रोत – वार्षिक ऋतु एवं फसल प्रतिवेदन भू अभिलेख शाखा जिला कोरिया, छत्तीसगढ़

(B) कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि – ऐसी भूमि जो प्राकृतिक रूप से ऊसर भूमि, कृषि के लिए अयोग्य एवं अन्य उपयोग में लायी गई भूमि यह वह भूमि होती है जिसमें सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक भू–दृश्यों के अनेक महत्वपूर्ण तत्वों में अधिवास, परिवहन एवं संचार के साधन, सिंचाई के साधन, उद्योग एवं बाजार निर्माण के क्षेत्र उपयोग में लायी जाती है। जिले में 2001–02 पर आधारित 2010–11 में 1.22 प्रतिशत में वृद्धि प्राप्त हुई वहीं अध्ययन क्षेत्र के इकाई स्तर पर देखा जाय तो कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि में सर्वाधिक वृद्धि सोनहत तहसील में 5.37 प्रतिशत प्राप्त हुआ। उल्लेखानीय है कि वर्ष 2000 में नवनिर्मित छत्तीसगढ़ राज्य का गठन होने के फलस्वरूप जिला कोरिया में जनसंख्या का भार अपेक्षाकृत बढा है परिणामस्वरूप सोनहत तहसील में नगरीय क्षेत्र अधिवास, परिवहन एवं बाजार जैसे क्षेत्रों के विकास में वृद्धि हुयी है वहीं सबसे कम भरतपुर तहसील में 0.45 प्रतिशत प्राप्त हुआ है।

(C) परती के अतिरिक्त अकृषित भूमि –भूमि उपयोग के अंर्तगत इस प्रकार की भूमि के क्षेत्र में वर्तमान एवं भविष्य की रूपरेखा नियोजित कर निर्धारित की जाती है। इस प्रकार की भूमि में योजनाबद्ध वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से भावी सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए कृषि विकास हेतु उपयोग में लायी जाती है। वर्तमान में इस प्रकार की भूमि दो प्रकार से

भूमि वृक्ष, झाडियां, उद्यान एवं चारागाह भूमि विभाजित है। तुलनात्मक रूप से दस वर्ष पूर्व की तुलना में वर्ष 2001–02 में जिले में –0.04 प्रतिशत कमी देखी गई। वस्तुतः इस श्रेणी के कमी का कारण कृषि क्षेत्र में विस्तार के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है। जिले में इस श्रेणी की भूमि में सर्वाधिक कमी खडगवां, एवं बैकुण्ठपुर तहसील में क्रमशः –1.61 एवं–0.03 प्राप्त हुआ।

(D) परती भूमि – परती भूमि के अंर्तगत ये सभी भूखण्ड सम्मिलित है जिन पर पहले कृषि की जाती थी किन्तु पिछले पांच वर्षों से अस्थायी रूप से उन पर फसलें नहीं उत्पादित की है। परती भूमि दो वर्गों में रखी जाती है। चालू परती भूमि जिसमें केवल चालू वर्ष में ही कृषि नहीं की गई है। दूसरी पुरानी परती पिछले पांच वर्षों से अधिक समय से फसलें नहीं ली गई है तो उसे इस वर्ग के अंर्तगत वर्गीकृत करते हैं। इसका प्रमुख कारण कृषक द्वारा साधनों की कमी, सिंचाई सुविधाओं की कमी, मिट्टी अपरदन आदि कारणों से कुछ समय के लिए पडती छोड़ दी जाती है। पडती भूमि एवं निराफसली क्षेत्र से घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। सभी भौगोलिक अनुकूल दशाएं उपलब्ध होने पर बोये गये क्षेत्र का विस्तार किया जा सकता है। जिले में 2001–02 से 2010–11 के बीच में कुल कृषि के क्षेत्र 0.61 प्रतिशत की कमी प्राप्त हुई वहीं निराफसली क्षेत्र में वृद्धि देखगा गया। तहसील स्तर पर देखा जाय तो पडती भूमि का विस्तार सोनहत तहसील में 5.31 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई जबकि सबसे कम बैकुण्ठपुर तहसील में –2.44 प्रतिशत प्राप्त हुई।

(E) शुद्ध कृषिगत भूमि – इसे निराफसली क्षेत्र भी कहते हैं। कृषि विकास में इस प्रकार की भूमि का सर्वाधिक महत्व है। वर्ष 2001–02 में अध्ययन क्षेत्र में 42.01 प्रतिशत शुद्ध बोया गया क्षेत्र के अंर्तगत था, जो वर्ष 2010–11 में बढ़कर 67.00 प्रतिशत अर्थात् 24.32 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त हुई। इस प्रकार निराफसली क्षेत्र में वृद्धि होने से कृषि योग्य पडती भूमि, अकृषित भूमि की कमी को दर्शाता है। सारणी क्र.–2 के अनुसार 2010–11 के वर्षों में खडगवां तहसील में सर्वाधिक क्षेत्र 2.11 प्रतिशत में वृद्धि होने का कारण सिंचाई सुविधाओं की सुविधा प्राप्त होना जबकि बैकुण्ठपुर एवं भरतपुर तहसील में क्रमशः 1.29 एवं 0.86 प्रतिशत वृद्धि प्राप्त हुई। अध्ययन क्षेत्र के सोनहत एवं मनेन्द्रगढ तहसील में क्रमशः सबसे कम –5.76 एवं –1.1 प्रतिशत प्राप्त हुई इसका प्रमुख कारण पडती भूमि के क्षेत्र में वृद्धि होना इंगित करता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव – अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2001–02 की तुलना में भूमि उपयोग के क्षेत्र में कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि में 1.22 प्रतिशत एवं निराफसली क्षेत्र में 24.99 प्रतिशत वृद्धि देखी गई। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2000 में नवनिर्मित छत्तीसगढ राज्य का गठन होने के फलस्वरूप जिला कोरिया में जनसंख्या का भार अपेक्षाकृत बढ़ा परिणामस्वरूप अध्ययन क्षेत्र में नगरीय क्षेत्र में विस्तार के कारण आवास, परिवहन तथा संचार के साधनों में विकास हुआ है वहीं भूमि सुधार प्रबन्धन एवं सिंचाई के साधनों के विस्तार के कारण शुद्ध बोये गये क्षेत्रों में वृद्धि हुई। कृषि भूमि पर जनसंख्या के बढ़ते दबाव को कम करने हेतु दो फसली क्षेत्रों में वृद्धि एवं अनउपजाऊ भूमि एवं परती भूमि को कृषि के अन्तर्गत लाना होगा।

संदर्भ ग्रंथ –

1. **गोले उमा** (2011) "जिला दुर्ग (छ.ग.) का भूमि उपयोग एवं शस्य गहनता का कालिक एवं स्थानिक स्वरूप" Research Journal of Humanities and Social Sciences, अंक 2
2. **वर्मा श्याम किशोर एवं तिवारी डॉ. प्रमोद कुमार**(2021) "जनपद गोण्डा उ.प्र. के भूमि उपयोग प्रतिरूप का तुलनात्मक अध्ययन" International Journal of Reviews and Research in Social Sciences, अंक 9
3. **तिवारी आर.सी. एवं सिंह बी.एन.** (2014). "कृषि भूगोल" प्रवालिका पब्लिकेशन, प्रयागराज।
4. **कुमार अजित** (2014) "वैशाली जिले में भूमि उपयोग का वर्तमान प्रतिरूप" IJRAR अंक 1
5. **Joshi,Y.G.** (1972): Agricultural Geography of the Narmada Basin, M.P. Hindi garanth Academy, Bhopal.
6. **Hussain, Majid** (2004): Agricultural Geography Rawat Publication Jaipur and Delhi.
7. **Singh, Jasbir** (1974): Agricultural Atlas of India, Kurukshetra: Vishal Publication.
8. **Singh, B.B.** (1979): Agricultural Geography, Tara publication, Varanasi.
9. जिला सांख्यिकी पुस्तिका कोरिया, छत्तीसगढ़
10. भू अभिलेख शाखा जिला कोरिया, छत्तीसगढ़

*****